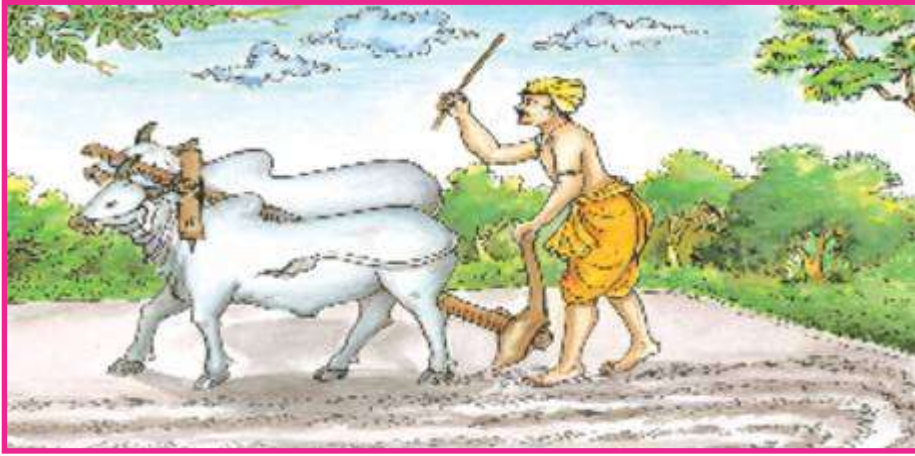


चतुर्दशः पाठः

कृषिगीतम्

(विशेषण-विशेष्य)

(प्रस्तुत पाठ अभिनव संस्कृत गीत है जो कुछ भजनों की धुन में रचा गया है। इसमें भारतीय किसानों की स्थिति का वर्णन है। किसान बहुत परिश्रम करके रूखी धरती को हरी-भरी वसुन्धरा में बदल देते हैं। वह मानो नये परिधान धारण कर लेती है। किसानों को यह चिन्ता है कि उनके परिश्रम से उत्पन्न सस्य सम्पदा का उपभोग करने का अवसर उन्हें नहीं मिलता है। उनके अनाज ऋण चुकाने के लिए बिचौलियों के हाथों सस्ते दामों में बेच दिये जाते हैं। ये बिचौलिए उन्हें बाजारों में अधिक मूल्य पर बेचते हैं और किसान निर्धन का निर्धन ही रह जाता है। उसकी अशिक्षा इसका कारण है, उसके पास सीधा बाजार में जाने का साधन नहीं। फिर भी सीधा-सादा किसान धरती के साथ अपने जुड़ाव के कारण प्रसन्न है। ऋतुएँ उसके लिए वरदान हैं।)



वयं गायाम कृषिगीतं धरा परिधानयुक्तेयम् ।

1. तदासीद् या विकृतवेषा कुरूपा निर्जला चेयम् ।
इदानीं नः श्रमेणाप्ता धरा परिधानयुक्तेयम् ॥

2. समेषां चिन्तयास्माकं कथञ्चित् कर्मणा फलितम् ।
बहूनां कर्षकाणां नः श्रमैः सस्यं समाकलितम् ॥
3. परं ते मध्यमाः सर्वे समेषामन्नराशीनाम् ।
क्रयं कृत्वाल्पमूल्येन, पुनर्नो निर्धनान् कुर्युः ॥
4. धराऽस्माकं भवेत्कामं न चान्नं नो हितायेदम् ।
वयं गायाम कृषिगीतं तथापीत्थं सुखायेदम् ॥
5. ऋतूनां कष्टमाघातैः वयं सर्वे समभ्यस्ताः ।
शरीरे नास्ति परिधानं कृषिः परिधानयुक्तेयम् ॥
6. सुखं सन्तोषवाचा यत् प्रशस्यं कल्पयामस्तत् ।
समेषामन्नभाजां सा कृषिः सुखलब्धये भूयात् ॥

अन्वयः - 1. तदा या इयम् विकृतवेषा कुरूपा निर्जला च आसीत् (सा इयं) धरा इदानीं नः श्रमेण (हरित) परिधानयुक्ता आप्ता ।

2. समेषां चिन्तया अस्माकं कर्मणा कथञ्चित् फलितम् । नः बहूनां कर्षकाणां श्रमैः सस्यं समाकलितम् ।

3. परं ते सर्वे मध्यमाः अल्पमूल्येन समेषाम् अन्नराशीनां क्रयं कृत्वा पुनः नः निर्धनान् कुर्युः।

4. कामं धारा अस्माकं भवेत्, इदम् अन्नं च नः हिताय न (अस्ति)। तथापि वयं कृषिगीतं गायाम, इत्थम् इदं सुखाय (भवति)।

5. वयं सर्वे ऋतूनाम् आघातैः कष्टं (प्रति) समभ्यस्ताः । शरीरे परिधानं नास्ति । (किन्तु) इयं कृषिः परिधानयुक्ता ।

6. समेषाम् अन्नभाजां सन्तोषवाचा यत् सुखं तत् प्रशस्तं (वयं) कल्पयामः। सा कृषिः सुखलब्धये भूयात् ।

शब्दार्थः

| | | |
|------------|---|-------------------------------|
| धरा | - | धरती |
| परिधानम् | - | पहनावा |
| विकृतवेषा | - | खराब वेशभूषा वाला |
| समेषाम् | - | सब का / की / के |
| कथञ्चित् | - | किसी तरह |
| कर्षकाणाम् | - | किसानों का |
| सस्यम् | - | फसल |
| समाकलितम् | - | प्राप्त हुआ |
| मध्यमाः | - | बीच वाले, बिचौलिये |
| नः | - | हमारा / री / रे |
| कामम् | - | निश्चय ही, भले ही, यद्यपि |
| आघातैः | - | आघातों / चोटों से |
| समभ्यस्ताः | - | अभ्यस्त, आदी |
| प्रशंस्यम् | - | अच्छा, प्रशंसनीय |
| कल्पयामः | - | करते हैं, कर सकते हैं (हमलोग) |
| सुखलब्धये | - | सुख पाने के लिए |
| अन्नभाजाम् | - | अन्न खाने वालों का |

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेद :

| | | |
|-------------------|---|------------------------------------|
| तदासीत् | - | तदा + आसीत् (दीर्घसन्धिः) |
| चेयम् | - | च + इयम् (गुणसन्धिः) |
| श्रमेणाप्ता | - | श्रमेण + आप्ता (दीर्घसन्धिः) |
| परिधानयुक्तेयम् | - | परिधानयुक्ता + इयम् (गुणसन्धिः) |
| चिन्तयास्माकम् | - | चिन्तया + अस्माकम् (दीर्घसन्धिः) |
| कृत्वाल्पमूल्येन | - | कृत्वा + अल्पमूल्येन (दीर्घसन्धिः) |
| पुनर्नो (पुनर्नः) | - | पुनः + नः (विसर्गसन्धिः) |
| धराऽस्माकम् | - | धरा + अस्माकम् (दीर्घसन्धिः) |
| चान्नम् | - | च + अन्नम् (दीर्घसन्धिः) |
| हितायेदम् | - | हिताय + इदम् (गुणसन्धिः) |
| नास्ति | - | न + अस्ति (दीर्घसन्धिः) |
| कल्पयामस्तत् | - | कल्पयामः + तत् (विसर्गसन्धिः) |
| तथापीत्थम् | - | तथा + अपि + इत्थम् (दीर्घसन्धिः) |

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

| | | |
|--------|---|--|
| गायामः | - | √गै + लोट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम् |
| आसीत् | - | √अस् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| कृत्वा | - | √कृ + क्त्वा |

| | | |
|----------|---|--|
| कुर्युः | - | $\sqrt{\text{कृ}}$ + विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् |
| भवेत् | - | $\sqrt{\text{भू}}$ + विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| अस्ति | - | $\sqrt{\text{अस्}}$ + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| कल्पयामः | - | $\sqrt{\text{कृप्}}$ + णिच्, लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम् |
| भूयात् | - | $\sqrt{\text{भू}}$ + लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |

अभ्यासः

मौखिकः

1. गीतं सस्वरं गायत ।
2. स्वमातृभाषायां कृषिगीतं श्रावयत ।

लिखित :

3. गीतांशेषु रिक्तस्थानानि स्मरणेन पूरयत -

समेषां कथंचित् ।
 धराऽस्माकं भवेत्कामं ।
 वयं गायाम सुखायेदम् ।
 ऋतूनां वयं सर्वे

4. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनं च लिखत -

| | पदानि | लिङ्गम् | विभक्तिः | वचनम् |
|------|------------|--------------|----------|----------|
| यथा- | कर्षकाणाम् | पुँल्लिङ्गम् | षष्ठी | बहुवचनम् |
| | शरीरे | | | |
| | सुखाय | | | |

| | | | |
|----------|-------|-------|-------|
| कर्मणा | | | |
| आघातैः | | | |
| उपलब्धये | | | |

5. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

- (क) तदा धरा विकृतवेषा आसीत् ।
(ख) इदानीं धरा परिधानयुक्ता अस्ति ।
(ग) कर्षकाणां श्रमैः सस्यं प्राप्यते ।
(घ) वयं कृषिगीतं गायाम ।
(च) कर्षकाणां कृषिकर्म अस्माकं सुखाय भवति ।

6. निम्नवाक्येषु अव्ययपदानि चित्वा लिखत - तदा

- यथा** - तदा वसुधा कुरूपा आसीत् । तदा.....
(क) अस्माकं श्रमेण इदानीं धरा श्यामला अस्ति ।
(च) कर्षकाणां परिश्रमः कथंचित् सफलो जातः ।
(ट) परं मध्यमाः अल्पमूल्येन अन्नं क्रीणन्ति ।
(त) ते अस्मान् पुनः निर्धनान् कुर्वन्ति ।
(प) वसुन्धरा सुरूपा सजला च वर्तते ।

7. समुचितं विपरीतार्थकपदं चित्वा मेलयत -

| | |
|-----------|------------|
| इदानीम् | बहूनाम् |
| निर्जला | इदम् |
| दुःखाय | केषाञ्चित् |
| अल्पानाम् | तदा |
| समेषाम् | निर्धनान् |
| धनिनः | सजला |
| तत् | सुखाय |

8. कोष्ठात् पदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

मिलति, गङ्गायाः, वर्तते, हिमालयात्, देशस्य

विहारस्य राजधानी पाटलिपुत्रम् । इदं नगरं

तटे अवस्थितमस्ति । गङ्गा अस्माकं पवित्रतमा नदी वर्तते ।

इयं निःसृत्य वङ्गोपसागरे

9. निम्नलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नानां निर्माणं कुरुत

भारतवर्षं कृषिप्रधानः देशः वर्तते । अत्र षट् ऋतवः भवन्ति । वसन्तः ऋतूनां राजा कथ्यते । विविधेषु ऋतुषु विविधानि सस्यानि फलानि च उत्पद्यन्ते । अत्रत्या धरा सर्वदा सस्यश्यामला भवति । कृषिकाश्च परिश्रमिणः सन्ति ।

यथा - भारतवर्षं कीदृशः देशः वर्तते ?

.....

.....

.....

.....

.....

योग्यता-विस्तारः

इस नवगीत की रचना प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ने की है । इसका लयपूर्वक गान सम्भव है जिसे कक्षाओं में बताया जा सकता है ।

यह एक विडम्बना है कि सबको भोजन देनेवाला भारतीय किसान स्वयं प्रायः भूखा रहता है । पृथ्वी को दिव्य परिधान से विभूषित करने वाला किसान स्वयं आवश्यक वस्त्र से भी वञ्चित रहता है । किसान कई प्रकार के हैं । बड़े-बड़े खेतों के स्वामी, ट्रैक्टर आदि उपकरणों से खेती करने वाले बहुत सम्पन्न हैं। किन्तु कुछ किसान ऐसे भी हैं जो दूसरों के स्वामित्व वाले खेतों में दैनिक मजदूरी करते हैं । प्रस्तुत

कृषिगीत में ऐसे ही दीन-हीन किसानों का वर्णन है । संतोष की अद्भुत मूर्ति ऐसा किसान विचारों से बहुत ईमानदार है । इसे वह अपनी नियति मानकर संतुष्ट रहता है, किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता । इधर कुछ वर्षों में राजनीति का खेल खेलने वालों ने उसमें आक्रोश उत्पन्न करने का प्रयास किया है । इसे किसानों की आर्थिक दशा को सुधार कर दूर किया जा सकता है किन्तु इसके लिए राजनेताओं में दृढ़ इच्छाशक्ति और स्वस्थ आर्थिक नीति के संचालन की क्षमता होनी चाहिए ।

किसान सब कुछ देखते हुए भी इसलिए प्रसन्न है कि उसके परिश्रम से धरती सब को भोजन देती है, और वह स्वयं भी सुन्दर रूप धारण कर लेती है ।

- अन्तरा 1 - कुरूप, निर्जल धरती को किसान के श्रम से हरा-भरा बनाना ।
- अन्तरा 2 - सभी किसानों के परिश्रम, कर्म तथा चिन्ता से फसल की प्राप्ति ।
- अन्तरा 3 - मध्यस्थ लोगों के कारण अल्पमूल्य पर अन्नराशि का क्रय एवं किसानों का निर्धन ही रह जाना।
- अन्तरा 4 - अन्न भले ही किसानों के हित में न हो फिर भी उन्हें सुख है, वे कृषिगीत गाते हैं ।
- अन्तर 5 - सभी ऋतुएँ के आघातों को सहते हुए उनका नग्नप्राय शरीर अभ्यस्त हो गया है । स्वयं परिधान नहीं किन्तु खेत परिधानयुक्त हैं ।
- अन्तरा 6 - सभी उपभोक्ताओं के लिए कृषि सुखकारक हो, यही किसान को संतोष है ।

QQQ